तथ्य या भ्रम?

टीकों से ऑटिज़्म नहीं होता है।



आत्मकेंद्रित मानव विविधता का एक सामान्य हिस्सा है

ऑटिज़्म से पीड़ित लोग अन्य लोगों के मुकाबले दुनिया के बारे में अलग तरीके से सोचते और अनुभव करते हैं।इन भिन्नताओं में व्यक्ति का लोगों से बातचीत करने का तरीका, बोलचाल और उसका व्यवहार शामिल हो सकते हैं। ऑटिज़्म का निदान जटिल हो सकता है, लेकिन यह इंसानों में विविधता का एक सामान्य हिस्सा है।

एक फ़र्ज़ी अध्ययन की वजह से लोगों के मन में ऐसा शक पैदा हुआ जो आज तक खत्म नहीं हुआ है।

टीकों और ऑटिज़्म के बीच संबंध को लेकर बहुत सी चिंताएं, द लैंसेट (The Lancet), नामक एक शोध पत्रिका में Andrew Wakefield द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन से सामने आती हैं। इस अध्ययन में 12 बच्चे शामिल थे। इसमें पाया गया कि MMR का टीका लगने के तुरंत बाद बच्चों में विकासात्मक अंतर के शुरुआती लक्षण दिखाई देने लगे थे। Wakefield, MMR और ऑटिज़्म के बीच एक स्पष्ट वैज्ञानिक संबंध नहीं खोज पाए; फिर भी, उन्होंने यह नतीजा निकाला कि MMR टीके का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

2010 में, 'द लैंसेट' ने इस पूरे अध्ययन को वापस ले लिया। उन्होंने पाया कि Wakefield ने अपने शोध के दौरान नैतिकता का पालन नहीं किया था। Wakefield ने अपने बेटे की बर्थडे पार्टी में आए बच्चों के ब्लड सैंपल लिए थे। Wakefield ने अध्ययन में शामिल बच्चों पर गैर-ज़रूरी और तकलीफ़देह (इन्वेसिव) प्रक्रियाएं की थीं। वह यह खुलासा करने में भी असफ़ल रहे कि उन्हें उन माता-पिता से फ़ंडिंग मिली थी जिन्हें पहले से ही MMR टीके को लेकर शंकाएं थीं। ब्रिटिश मेडिकल काउंसिल ने Wakefield को पेशेवर दुराचार के 30 आरोपों में दोषी पाया। उन्होंने उनका मेडिकल लाइसेंस छीन लिया और उनके मेडिकल प्रैक्टिस करने पर रोक लगा दी।

इस फ़र्ज़ी अध्ययन के कारण कुछ देखभाल करने वालों का MMR टीके से विश्वास उठ गया और उन्होंने अपने बच्चों को यह टीका लगवाने से मना कर दिया। इसी वजह से आखिरकार दुनिया भर में खसरे की बीमारी फ़िर से फ़ैलने लगी। इस अध्ययन के पहली बार छपने के बाद के 28 वर्षों में, सिर्फ़ इंग्लैंड और वेल्स में ही खसरे के तकरीबन 90,000 मामले दर्ज किए गए हैं। 1991 में बीमारी के पूरी तरह खत्म होने की घोषणा के बाद से, अब अमेरिका में खसरे के सबसे ज़्यादा मामले देखने को मिल रहे हैं। वर्ष 2025 में 2,289 मामले दर्ज किए गए थे।

कई बड़े अध्ययनों ने इस मिथक को तोड़ दिया है

Wakefield के फ़र्ज़ी अध्ययन के आने से, टीकों और ऑटिज़्म के बीच संभावित संबंध को लेकर चिंता बढ़ गई। इसके कारण दुनिया भर के शोधकर्ताओं ने टीकों और ऑटिज़्म के बीच किसी भी संबंध का पता लगाने के लिए दर्जनों अध्ययन किए। इनमें से कोई भी अध्ययन Wakefield के निष्कर्षों को दोहरा नहीं सका और न ही MMR टीके और ऑटिज़्म के बीच कोई संबंध खोज सका।

टाइमिंग संयोग है

ऑटिज़्म का पता चलने (डायग्नोसिस) के बाद, माता-पिता और देखभालकर्ता शायद इस सोच में पड़ सकते हैं कि उनके बच्चे में ऑटिज़्म किस कारण से हुआ।

बच्चों को MMR (खसरा, मंप्स और रूबेला) का टीका लगभग 12 –15 महीने की उम्र में लगाया जाता है। यह ठीक वही उम्र है जब बच्चों में ऑटिज़्म के पहचाने जाने योग्य लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इस टाइमिंग के कारण, देखभालकर्ता यह सोच सकते हैं कि टीके का संबंध उनके बच्चे में ऑटिज़्म के डायग्नोसिस से है।

1-2 साल की उम्र से,

- बच्चे बोलने लगते हैं।
- सामाजिक संपर्क अधिक जटिल हो जाता है।
- आत्मकेंद्रित लक्षण अक्सर पहचानना आसान हो जाता है।
- बच्चों को एमएमआर वैक्सीन की पहली खुराक मिलती है।

लेकिन कई अध्ययनों से यह पता चला है कि ऑटिज़्म और टीकों के बीच कोई संबंध नहीं है। ऑटिज़्म से पीड़ित लोग अन्य लोगों के मुकाबले दुनिया के बारे में अलग तरीके से सोचते और अनुभव करते हैं। ऑटिज़्म

निदान सुधार द्वारा आत्मकेंद्रित में वृद्धि को समझाया जा सकता है।

पिछले 20 वर्षों में, बच्चों में ऑटिज़्म के निदान की दर में वृद्धि हुई है। हालांकि, ऑटिज़्म के निदान के मानदंड और निदान तक पहुंच का भी विस्तार हुआ है। पहले के मुकाबले आज ऑटिज़्म के बारे में बहुत ज़्यादा जागरूकता है। माता-पिता, शिक्षक और डॉक्टर ऑटिज़्म के लक्षणों को बेहतर तरीके से पहचानने के योग्य हैं और बच्चों का निदान कराने में मदद करते हैं। आज जिन बच्चों में ऑटिज़्म का निदान होता है, हो सकता है कि अतीत में उनका निदान न हुआ होता। वैज्ञानिक अभी भी यह अध्ययन कर रहे हैं कि ऑटिज़्म किस वजह से होता है।

ऑटिज़्म के निदान के बढ़ते मामलों में वृद्धि ने शोधकर्ताओं को ऑटिज़्म के कारणों का पता लगाने के लिए प्रेरित किया है। वर्तमान थ्योरीज़ बताती हैं कि यह जेनेटिक है और यह बच्चे के जन्म से पहले ही मौजूद होता है। उदाहरण के लिए, जुड़वा बच्चों पर किए गए अध्ययनों से पता चला है कि अगर एक जैसे दिखने वाले जुड़वा बच्चों (आइडेंटिकल ट्विन) में से एक बच्चे में ऑटिज़्म का निदान होता है, तो उसके जुड़वा भाई या बहन में भी इसके निदान की संभावना लगभग 90% होगी। रिसर्च से यह भी पता चलता है कि गर्भावस्था के दौरान पर्यावरण का असर भी ऑटिज़्म की वजह बन सकता है। शोधकर्ता योगदान देने वाले अन्य संभावित कारकों की निरंतर तलाश कर रहे हैं।

अच्छी बात यह है कि टीके या टीके में मौजूद सामग्री से ऑटिज़्म होता है या नहीं, इसका जवाब विज्ञान द्वारा दिया जा चुका है। नतीजे बिल्कुल स्पष्ट हैं: टीकों से ऑटिज़्म नहीं होता है।

MMR वैक्सीन सुरक्षित है, लेकिन खसरा खतरनाक है

खसरा एक उच्च जोखिम वाली संक्रामक बीमारी है जो निमोनिया, मस्तिष्क की सूजन, सुनवाई हानि और मृत्यु का कारण बन सकती है।

एक दशक के शोध के बाद, हम आत्मविश्वास से कह सकते हैं कि टीके आत्मकेंद्रित का कारण नहीं बनते हैं।
इसका मतलब यह है कि माता-पिता या देखभाल करने वाले के रूप में, आप अपने बच्चों को टीकाकरण करने के लिए चुनने में आश्वस्त हो सकते हैं।

एमआरआर वैक्सीन से पहले हर साल अमेरिका में,

- खसरा संक्रमित 3 – 4 मिलियन अमेरिकी।
- खसरे से सैकड़ों लोग मारे गए।
- हजारों अस्पताल में भर्ती थे।
- लगभग हर बच्चा 15 से पहले संक्रमित था।

IMMUNIZE FOR GOOD

IMMUNIZE COLORADO